ARYAVART SHODH VIKASH PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 306-309
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-7, No.-I, Issues-VIII YEAR- June-2017

# शिक्षा ग्रन्थों में वैदिक स्वर विवेचन तथा स्वरोच्चारण में हस्त प्रदर्शन का महत्व

**डॉ0 विनीता सिंह**

एसो0 प्रो0– संस्कृत विभाग, कन्या महाविद्यालय आर्य समाज भूड़, बरेली (उ0प्र0) भारत

***वेदार्थ परिरक्षण में ध्वनि के परिचय के साथ स्वर विशेष का ज्ञान भी अत्यावश्यक है। 'मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह। स वग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोपराधात्।।' कहकर शिक्षाविदों ने मन्त्रार्थ की शुद्धता के लिए स्वरों की विशिष्टता को स्वीकार किया है। स्वरोच्चारण प्रक्रिया में अवयवों के संचालन वैशिष्ट्य के कारण स्वर के स्वरूप में जो भिन्नता आ जाती है उससे अर्थ में भी भिन्नता उपस्थित होती है। एतदर्थ शिक्षा ग्रन्थों में स्वरों के स्वरूप का सम्यक् विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। वर्णों में श्रुतिभेद के स्थापकों में 'स्वर' भी एक है। स्वर के भेद से वर्णों का स्वरूप भी भिन्न होता है। साथ ही अर्थ में भी भेदकता प्रकट हो जाती है। लौकिक और वैदिक भेद से स्वर के दो रूप हैं। काकु रूप स्वर लौकिक और उदात्तादि रूव स्वर वैदिक कहलाते हैं। यद्यपि लौकिक भाषा में भी उदात्तादि स्वरों की आवश्यकता दृष्टिगत होती है किन्तु वेद में इनका निबन्धन जितनी तीव्रता से हुआ है उतनी तीव्रता से लौकिक भषा में नहीं हुआ। अतः उदात्तादि स्वरों की गणना वैदिक के अन्तर्गत की जाती है।***

**शिक्षा ग्रन्थों में स्वर विवेचन–** स्वरों की वर्ण रूप विशेषकता, विवक्षितार्थ प्रत्यायकता, अर्थ विशेष निर्णायकता और स्वर दोष में अनर्थ प्राप्ति आदि विषय शिक्षा ग्रन्थों में उल्लिखित किए गए हैं। शिक्षा ग्रन्थ वेदांग होने के कारण वैदिक स्वरों का ही विवेचन प्रस्तुत करते हैं। स्वरों के सामान्यतः तीन रूप हैं– उदात्त, अनुदात्त और स्वरित। महर्षि पाणिनि ने 'उच्चैरुदात्तः' 'नीचैरनुदात्तः' और 'समाहारः' 'स्वरितः' कहकर तीनों स्वरों को परिभाषित किया है। जब तालु आदि निर्धारित उच्चारण स्थानों में ऊर्ध्वाश में वायु के अभिघात से स्वर उत्पन्न होता है तब वह स्वर उदात्त है। इसी प्रकार जब अधो भाग में उत्पन्न हो तब वह स्वर 'अनुदात्त' है। जब स्वरों का कुछ अंश उच्चारण स्थान के अधोभाग में और कुछ अंश ऊर्ध्व भाग में उत्पन्न हो तब वह स्वर 'स्वरित' कहलाता है। जिस प्रकार स्थान के भेद से कर्ण ध्वनि में भेद प्रकट होता है जैसे क और च में, उसी प्रकार उच्चारण के अवान्तर भेद से वर्ण में भी अन्तर प्रकट हो जाता है और वर्ण श्रुति का यह अन्तर अर्थ में भी अन्तर उपस्थित करता है। शिक्षा ग्रन्थों के अनुसार स्वर इस प्रकार विवेचित किए गए हैं।

**पाणिनीय शिक्षा–** इस शिक्षा में स्वरों के विषय में तीन भेद उदात्त, अनुदात्त और स्वरित कहे गए हैं। उनके उच्चारण में हस्तप्रदर्शन प्रकार का उल्लेख किया गया है। संगीत के सात स्वरों का अन्तर्भाव इन्हीं तीन स्वरों में माना गया है। उदात्तादि स्वर की २ष्टि से नौ प्रकार का पद विभाजन कहा गया है– अन्तोदात्त, आद्युदात्त, सर्वोदात्त, सर्वानुदात्त, अनुदात्त पूर्व स्वरित, मध्योदात्त, सर्वस्वरित, द्वयुदात्त, त्र्युदात्त (1)। कौहलीय और नारदीय शिक्षा में भी इसी प्रकार का पद विभाजन स्वीकार किया गया है। नारदीय शिक्षा में 'त्र्युदात्त' को छोड़कर अन्य आठ पद विभाजन स्वीकार किए गए हैं।

**आपिशलि शिक्षा–** स्वरों के तीन भेद उदात्त, अनुदात्त और स्वरित स्वीकार किए गए हैं। उदात्तादि की कार्यकारिता, उदात्तादि के उच्चारण के समय अवयवों की स्थिति पर विचार किया गया है (2)।

**याज्ञवल्क्य शिक्षा–** उदात्त, अनुदात्त और स्वरित– स्वरों के ये तीन भेद ही कहे गए हैं (3)। उदात्त और अनुदात्त के स्वरूप के विषय में अधिक नहीं कहा गया है किन्तु स्वरित के विषय में उल्लेख करते हुए कहा गया है कि स्वरित के आठ भेद होते हैं– जात्य, अभिनिहित, क्षैप्र, प्रश्लिष्ट, तैरोव्यंजन। तैरोविरामक, पादवृत्त और ताथाभाव्य (4)। इस शिक्षा में प्रचय लक्षण भी बताया गया है। उदात्त के बाद अनुदात्त को स्वरित होता है, यदि उसके बाद उदात्त और स्वरित नहीं हो। स्वरित के बाद अनुदात्त को प्रचय होता है, यदि बाद में उदात्त या स्वरित नहीं हो।

उदात्तानिहतः स्वार्यः स्वरोदात्तौ न तत्परौ। स्वरो यश्च तथाभूतो ज्ञेयः स प्रचयः सदा।। (5)।

उदात्त और अनुदात्त के समाहार में स्वरित स्वर होता है। उदात्तानुदात्त के ऐक्यभाव (भेदराहित्य) को प्रचय कहते हैं। उदात्तानुदात्तयोर्योगे स्वरितः स्वरउच्यते। ऐक्यं तत्प्रचयः प्रोक्तः सन्धिरेष मिथोद्भुते।। (6)।

इसे एक श्रुतिस्वर भी कहते हैं। प्रचय का अन्तर्भाव अनुदात्त में हो जाने से स्वरों के तीन ही भेद माने हैं। संगीत स्वर, हस्त प्रदर्शन प्रकार का भी वर्णन किया गया है।

**अनुरूपी लेखक**



ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-7, No.-I, Issues-VIII YEAR- June-2017

**वर्णरत्न प्रदीपिका शिक्षा–** उच्च, नीच और स्वरित कहकर स्वरों के तीन भेद स्वीकार किए हैं। स्वरित और प्रचय का स्वरूप भी स्पष्ट किया गया है। स्वरित के ही आठ भेद स्वीकार किए गए हैं (7)।

स्वरः उच्चः स्वरो नीचः स्वरः स्वरित एव च। स्वरप्रधाने त्रैस्वर्य व्यंजनं तेन सस्वरं।। (8)।

**स्वरांकुश शिक्षा–** उदात्त, अनुदात्त और स्वरित स्वरों को स्वीकार किया गया है। प्रचय लक्षण दिया गया है (9)। स्वरित के सात भेद स्वीकार किए गए हैं। जो इस प्रकार हैं– जात्य, अभिनिहित, क्षैप्र, तैरोव्यंजन, तिरोविराम, प्रश्लिष्ट और पादवृत्त (10)।

**स्वर भक्ति लक्षण शिक्षा–** तैरोविराम, क्षैप्र, तैरोव्यंजक, भाव्य, अभिनिहित, जात्य, पादवृत्त तथा प्रश्लिष्ट– ये आठ स्वरित के भेद स्वीकार किए गए हैं। उदात्तादि भेद से स्वर विभाग का उल्लेख नहीं किया गया है।

तैरोविरामः क्षैप्रश्च तैरोव्यंजकस्तथा। भाव्योऽभिनिहितो जात्यः पादवृतश्च सप्तमः।। प्रश्लिश्टा इति विज्ञेयाः .....। (11)।

**माण्डूकी शिक्षा–** चार प्रकार के स्वर कहे गए हैं– उदात्त, अनुदात्त, स्वरित और प्रचय। उदात्तादि का लक्षण नहीं दिया गया है केवल प्रचय का लक्षण दिया गया है।

उदात्तश्चानुदात्तश्च स्वरितः प्रचयस्तथा। चतुर्विधः स्वरः २ष्टः.....। (12)।

स्वरित के सात भेद कहे गए हैं– अभिनिहित, प्राश्लिष्ट, जाव्य, क्षैप्र, पादवृत्त, तैरोव्यंजन और तिरोविराम। ताथाभाव्य को स्वरित का भेद स्वीकार नहीं किया गया है।

अभिनिहितः प्राश्लिष्टः जात्यः क्षैप्रश्च पादवृत्तश्च्। तैरोव्यंजनः षष्ठस्तिरोविरामश्च सपतमः।। (13)।

**स्वराष्टक शिक्षा–** उदात्त, अनुदात्त, स्वरित और प्रचय ये चार स्वर भेद स्वीकार किए गए हैं। 'स्वरितं पंचधा' कहकर स्वरित के पांच प्रकार उद्देशित किए गए हैं। किन्तु जात्य, अभिनिहित, क्षैप्र और प्रश्लिष्ट कहकर स्वरित के चार भेदों का ही उद्देश्य और लक्षण प्रस्तुत किया है (14)।

**शैशिरीय शिक्षा–** इस शिक्षा में भी उदात्त, अनुदात्त, स्वरित और प्रचय ये चार स्वर कहे गए हैं। इनका लक्षण भी किया गया है।

नीचस्वरोऽनुदात्तः स्यादुच्चैश्चोदात्त उच्यते। स्वरितं तत्समाहारस्तदैक्यं प्रचयः स्मृतः।। (15)।

**कौहलीया शिक्षा–** उदात्त, अनुदात्त, स्वरित और प्रचय चार स्वरों तथा उनके लक्षणों का प्रदर्शन किया है। ताथाभाव्य के अतिरिक्त अन्य सात स्वरित भेदों को स्वीकार किया है। पाणिनीय शिक्षा के समान अन्तोदात्त आदि नौ प्रकार से पद विभाजन माना गया है (16)।

**सर्वसम्मत शिक्षा–** इस शिक्षा में उदात्तादि स्वरों के उच्चारण के समय अवयवों के संचालन व स्थिति के विषय में बताया गया है (17)।

**व्यास शिक्षा–** उदात्त, अनुदात्त, स्वरित और प्रचय इन चार स्वर भेदों और उनके स्वरूप का उल्लेख किया गया है। प्रचय का स्वरूप इस प्रकार कहा गया है कि स्वरित से परे अनुदात्त को प्रचय कहा जाता है। उसका उच्चारण उदात्त के समान करना चाहिए। क्षैप्र, प्रश्लिष्ट, नित्य, अभिनिहित, तैरोव्यंजन, पादवृत्त इन छह स्वरित भेदों का प्रतिपादन किया गया है। अन्य शिक्षाओं में आए 'जात्य' भेद को यहां 'नित्य' कहा है (18)।

**नारदीय शिक्षा–** उदात्त, अनुदात्त, स्वरित, प्रचय और निघात ये पांच प्रकार के स्वर कहे गए हैं (19)। आर्चिक स्वयत्रय प्रसंग में प्रचय का स्वरत्रय (उदात्त, अनुदात्त और स्वरित) में अन्तर्भाव माना गया है। यहां स्वरित से परे 'उदात्त' स्वर की प्रचय संज्ञा कही गई है। निघात का स्वरूप स्पष्ट नहीं किया गया है किन्तु अनुदात्ततर को 'निघात' समझने का संकेत है। पंचस्वर कहकर भी शिक्षाकार मूलतः स्वरत्रय ही स्वीकार करते हैं। स्वरितका स्वरुप इस प्रकार कहा है–

उच्चनीचस्य यन्मध्ये साधारणमिति श्रुतिः। तं स्वारं स्वरसंज्ञायां प्रतिजानन्ति शैक्षिकाः।। (20)।

स्वरित के सात भेद स्वीकार किए गए हैं–

जात्यः क्षैप्रोऽभिनिहितस्तैरव्यंजन एव च। तिरोविरामः प्रश्लिष्टः पादवृत्तश्च सप्तमः।। (21)।

उदात्त और अनुदात्त स्वरों के अवान्तर भेद नहीं पाए जाते किन्तु दोनों के समाहार अर्थात् स्वरित में उदात्तता अथवा अनुदात्तता के अंश तथा स्वरित स्वर में उदात्त और अनुदात्त की पूर्वापरता के कारण स्वरित के विभिन्न भेद हो जाते हैं। ऋषियों ने शिक्षा ग्रन्थों में स्वरित के भेदों पर भी उल्लेख किया है।

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-7, No.-I, Issues-VIII YEAR- June-2017

**स्वर के उच्चारण में हस्त प्रदर्शन विचार–** शिक्षा ग्रन्थों में इष्टफल की प्राप्ति हेतु उच्चारण करते समय हस्तांगुलि के संचालन नियम पर विशेष बल दिया गया है। हस्त प्रदर्शन के बिना वेद अनिष्टकारी होते हैं।

**पाणिनीय शिक्षा–** "हस्तहीनं तु योऽधीते स्वरवर्णविवर्जितम्। ऋग्यजुःसामभिर्दग्धः वियोनिमधिगच्छति।।" (22)।

वहीं ब्रह्मलोक की प्राप्ति हेतु हस्त संचालन अनिवार्य है–

'हस्तेन वेदं योऽधीते स्वरवर्णविवर्जितम्। ऋग्यजुःसामभिः पूतोब्रह्मलोके महीयते।।" (23)।

संहिता की विभिन्न शाखाओं का हस्तसंचालन विभिन्न प्रकार से था अतः सम्बन्धित शिक्षा शाखा विशेष के हस्तसंचालन का ही उल्लेख करती है। पाणिनीय शिक्षा में इस विषय में संक्षिप्त वर्णन किया गया है।

'अनुदात्तो ह्रदि ज्ञेयो मूर्ध्न्युदात्त उदाहृतः। स्वरितः कर्णमूलीयः सर्वास्येप्रचयः स्मृतः।।" (24)।

अर्थात् अनुदात्त उच्चारण करते समय ह्रदय पर, उदात्त उच्चारण करते समय सिर पर, स्वरित उच्चारण करते समय कर्णमूल पर तथा प्रचय उच्चारण करते समय मुख पर हस्तप्रक्षेप करना चाहिए। पाणिनीय शिक्षा में ही उदात्तादि का अन्य प्रकार से हस्तप्रदर्शन कहा गया है–

"उदात्तमाख्याति वृषोऽगुंलीनां प्रदेशिनी मूलनिविष्टमूर्धा। उपान्तमध्ये स्वरितं धृतंच कनिष्ठिकायामनुदात्तमेव।।" (25)।

अर्थात् अंगुष्ट का अग्रभाग उदात्त का उच्चारण करते समय तर्जनीमूल का स्पर्श करे, स्वरित का उच्चारण करते समय अनामिका के मध्य भाग का स्पर्श करे और अनुदात्त का उच्चारण करते समय कनिष्ठिका का स्पर्श करे। यह प्रदर्शन बहुत अधिक स्पष्ट नहीं है।

**व्यास शिक्षा–** व्यास शिक्षा में स्वरित स्वर प्रदर्शन हेतु शिर पर, उदात्तप्रचय प्रदर्शन हेतु मुख के समीप तथा अनुदात्त प्रदर्शन हेतु ह्रदय के सम्मुख हस्तस्थिति कही गई है–

"स्वारः शीर्षे मुखेऽप्युच्च प्रचयौ निहितो ह्रदि।।" (26)।

हस्तस्वर प्रदर्शन पूर्वक वेदाध्ययन ही पुण्यफलदायी होता है–

"सुहस्तस्वरविन्यासान्निऽर्मलाध्ययनं भवेत्। तत्पूतो ब्राह्मणो यस्तु ब्रह्मणा सह मोदते।।" (27)।

**याज्ञवल्क्य शिक्षा–** याज्ञवल्क्य शिक्षा में कहा गया है–

"समुच्चारयद्वर्णान् हस्तेन च मुखेन च। स्वरश्चैव तु हस्तश्च द्वावेतौ युगपत्स्थितौ।। हस्तभ्रष्टः स्वरभ्रष्टो न वेदफलमश्नुते।" (28)। याज्ञवल्क्य शिक्षा में हस्तसंचालन विस्तार से प्रदर्शित किया गया है–

"स्वरिते त्र्यंगुलं विद्यात् निपाते तुषडंगुलम्। उत्थाने तु नवागुंल्यमेतत्स्वारस्य लक्षणम्।।" (29)।

स्वरित के लिए हाथ को नासिका के अग्र भाग से तीन अंगुलि नीचे, अनुदात्त के लिए छह अंगुलि नीचे तथा उदात्त के लिए नौ अंगुलि नीचे करना चाहिए। संहिता के शाखा भेदों के अनुसार सम्बन्धित शिक्षाओं में भी हस्तसंचालन प्रकार भेद विभिन्नता लिए हुए हैं। शाखा पाठ परम्परा के अनुसार ही हस्तसंचालन परम्परा भिन्न–भिन्न थी।

अर्थववेद (19/71/1) में वर्णन है कि यथेच्छ वर देने वाली वेदवाणी अपने स्वाध्याय करने वाले द्विजमात्र को पापरहित करती हुयी पूर्णआयु, रोगादि क्लेशरहित जीवन, पुत्रपौत्रादि, कीर्ति, विपुलधन, बल एवं तेज आदि इस लोक के सम्पूर्ण सुख देती हुई अन्त में ब्रह्म ज्ञान प्राप्त कराकर ब्रह्मलोक का अनन्त सुख प्राप्त कराती है। वेदांग के रूप में शिक्षा ग्रन्थों में स्वरों तथा मन्त्रोच्चारण में हस्तसंचालनादि विवेचना वेद मंत्रों के उद्देश्य प्राप्ति में सहायक होती है क्योकि हस्तस्वरज्ञान के बिना वेद पाठ का यथार्थ फल नहीं मिलता–'हस्तभ्रष्टः स्वराद्भ्रष्टो न वेदफलमश्नुते।'

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पाणिनीय शिक्षा (45)
2. आपिशलि शिक्षा (20–21,22)
3. याज्ञवल्क्य शिक्षा (1)
4. याज्ञ० शिक्षा (76,77)
5. याज्ञ० शिक्षा–पूर्वार्द्ध (89)
6. याज्ञ० शिक्षा–पूर्वार्द्ध (90)
7. वर्णरत्न प्रदीपिका शिक्षा (56,57)



ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-7, No.-I, Issues-VIII YEAR- June-2017

8. वर्णरत्न प्रदीपिका शिक्षा (86)
9. स्वरांकुश शिक्षा (1)
10. स्वरांकुश शिक्षा (15,16)
11. स्वर भक्ति लक्षण शिक्षा (2–3)
12. माण्डूकी शिक्षा (5)
13. माण्डूकी शिक्षा (72)
14. स्वराष्टक शिक्षा (6)
15. पाणिनिशिक्षायाः शिक्षान्तरैः सह समीक्षा (डा० मधुकर पाठक, पृ 84)
16. उपर्युक्त
17. उपर्युक्त
18. व्यास शिक्षा (स्वर सन्धि प्रकारणे)
19. नारदीय शिक्षा (सप्तमी कण्डिका 9)
20. नारदीय शिक्षा (अष्ट० क० 7)
21. नारदीय शिक्षा (अष्ट० क० 10)
22. पाणिनीय शिक्षा 54।
23. पाणिनीय शिक्षा 55।
24. पाणिनीय शिक्षा ।48।
25. पाणिनीय शिक्षा ।43।
26. व्यास शिक्षा ।292।
27. व्यास शिक्षा ।335–336।
28. याज्ञवल्क्य शिक्षा 25–26।
29. याज्ञवल्क्य शिक्षा 54।

*****

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14